Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

हिंदी लोकधरोहर: ऐतिहासिक यात्रा, सांस्कृतिक विशेषताएँ और संरक्षण का नवाचार

Akat Rohan Vilasrao
Research Scholar, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore
Dr. Rajendra Baviskar
Supervisor, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

सारांश

यह शोध-पत्र हिंदी भाषा के लोकगीतों के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक पहचान और संरक्षण हेतु आवश्यक नवाचारपूर्ण उपायों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा के रूप में कार्य करते हैं, जिनमें समुदायों की जीवनशैली, विश्वास, परंपराएँ और भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ निहित हैं। मौखिक परंपरा के रूप में विकसित इन गीतों पर आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है, जिससे इनका अस्तित्व चुनौतीपूर्ण हो गया है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक महत्व और समकालीन चुनौतियों के साथ-साथ संरक्षण के लिए डिजिटल आर्काइविंग, एआई तकनीक, शैक्षणिक एकीकरण और सामुदायिक सहभागिता जैसे अभिनव उपायों पर विशेष ध्यान दिया गया है। शोध का उद्देश्य इस सांस्कृतिक धरोहर को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करना और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना है।

संकेत शब्द: हिंदी लोकगीत, सांस्कृतिक पहचान, मौखिक परंपरा, संरक्षण रणनीतियाँ, डिजिटल आर्काइविंग

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रस्तावना

हिंदी भाषा के लोकगीत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण और जीवंत घटक हैं, जो सदियों से सामाजिक जीवन, रीति-रिवाजों, उत्सवों, मान्यताओं और सामूहिक अनुभवों को अभिव्यक्त करते आए हैं। ये गीत मात्र मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि एक ऐसे सांस्कृतिक दस्तावेज भी हैं जो समय, समाज और परिवर्तनशील मानवीय अनुभवों का विवरण संजोए हुए हैं। लोकगीतों की परंपरा मौखिक रूप में विकसित हुई और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होती रही, जिसके कारण इनमें क्षेत्रीय विविधताएँ, स्थानीय बोली-भाषाएँ और सामुदायिक विशिष्टताएँ स्वाभाविक रूप से दिखाई देती हैं। हिंदी लोकगीतों का ऐतिहासिक विकास प्राचीन कृषि-आधारित जीवन से लेकर मध्यकालीन भक्ति-संस्कृति और आधुनिक काल के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन तक के व्यापक कालखंड को समेटे हुए है। समाज के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक ढाँचों में हुए परिवर्तनों ने इन गीतों की संरचना, विषय-वस्तु और प्रस्तुति शैली को प्रभावित किया है, जिसके चलते लोकगीत आज भी समकालीन सामाजिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करने में सक्षम हैं। लोकगीतों की सांस्कृतिक पहचान अत्यंत सशक्त है, क्योंकि ये व्यक्ति और समुदाय के बीच गहरे भावनात्मक संबंधों का निर्माण करती हैं एवं सांस्कृतिक निरंतरता और सामूहिक स्मृति को सुरक्षित रखती हैं। हालांकि, आधुनिकता, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रभाव, व्यावसायीकरण और शहरी जीवनशैली के विस्तार ने लोकगीत परंपरा के अस्तित्व को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। नई पीढ़ी की सांस्कृतिक प्राथमिकताओं में बदलाव और लोकधुनों का डिजिटल संस्कृति में प्रतिस्थापित होना भी इनके संरक्षण की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। ऐसे परिदृश्य में, लोकगीतों के संरक्षण हेतु नवाचारपूर्ण उपाय—जैसे डिजिटल आर्काइव, एआई-आधारित ध्वनि संरक्षण, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, सामुदायिक सहभागिता और शैक्षणिक एकीकरण—अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। यह शोध-पत्र हिंदी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

लोकगीतों के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक पहचान एवं वर्तमान चुनौतियों का विश्लेषण करते हुए संरक्षण के लिए नवीन रणनीतियों को प्रस्तुत करने का उद्देश्य रखता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए इस सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखा जा सके।

अध्ययन का महत्त्व

हिंदी भाषा के लोकगीतों पर आधारित इस अध्ययन का महत्त्व उनकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक प्रासंगिकता को समझने में निहित है। लोकगीत न केवल सामुदायिक भावनाओं, परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं का दर्पण हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक निरंतरता और सामूहिक पहचान को भी सुदृढ़ करते हैं। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, शहरीकरण और मीडिया-प्रभुत्व के कारण लोकगीतों के संरक्षण और प्रसार को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे में इस शोध का महत्त्व और बढ़ जाता है। अध्ययन न केवल लोकगीतों की मौजूदा स्थिति का विश्लेषण करता है, बल्कि उनके संरक्षण के लिए व्यावहारिक और तकनीकी नवाचारों की आवश्यकता भी स्पष्ट करता है। यह शोध सांस्कृतिक नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, संगीत विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है, जिससे हिंदी लोकगीतों की समृद्ध विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने, पुनर्जीवित करने और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सुरक्षित रखने के प्रयासों को दिशा मिलती है।

अध्ययन का दायरा

यह अध्ययन हिंदी भाषा के लोकगीतों के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक पहचान और संरक्षण संबंधी नवाचारपूर्ण उपायों के विश्लेषण तक सीमित है। अध्ययन का दायरा मुख्यतः उत्तर भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों—जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा—में प्रचलित लोकगीत परंपराओं को केंद्र में रखते हुए निर्धारित किया गया है। इसमें लोकगीतों की विषय-वस्तु, प्रसंग, संगीतात्मक संरचना, भाषा-बोली की विविधता

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

और सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यों का विश्लेषण शामिल है। शोध मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, सामुदायिक पहचान तथा आधुनिक प्रभावों—जैसे वैश्वीकरण, शहरीकरण, डिजिटलीकरण—के संदर्भ में लोकगीतों की बदलती स्थिति का भी आकलन करता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए वर्तमान संरक्षण उपायों व चुनौतियों की समीक्षा की गई है और तकनीकी, सामाजिक तथा संस्थागत स्तर पर नवाचारपूर्ण संरक्षण मॉडल प्रस्तावित किए गए हैं। यह अध्ययन प्रदर्शन-आधारित संगीत विश्लेषण को छोड़कर मुख्यतः सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक अध्ययन की सीमाओं तक केंद्रित है।

लोकगीतों की अवधारणा और परिभाषाएँ

लोकगीतों की अवधारणा भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है, जहाँ इन्हें एक ऐसी मौखिक कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है जो किसी समुदाय के सामूहिक अनुभव, जीवन-मूल्यों, भावनाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक संरचनाओं को सहज रूप में प्रस्तुत करती है। लोकगीत मूलतः लोकजीवन की परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं और साधारण लोगों की भाषा, बोली, भावनात्मक संवेदना तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब होते हैं। इनका स्वरूप सरल, स्वाभाविक और सहज होता है, क्योंकि ये किसी लिखित नियम या संगीतशास्त्रीय ढांचे में बंधे नहीं होते; बल्कि सामुदायिक अनुभवों से विकसित होते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से संप्रेषित होते रहते हैं। परिभाषात्मक रूप से, लोकगीत (Folk Songs) वे गीत हैं जो किसी विशेष समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से रचे और गाए जाते हैं, जिनके रचनाकार प्रायः अज्ञात होते हैं, और जिनमें लोकसंस्कृति के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तत्व समाहित रहते हैं। कई विद्वानों के अनुसार, लोकगीत सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों के जीवंत दस्तावेज हैं, जो जीवन के विविध प्रसंगों—जैसे जन्म, विवाह, कृषि, त्योहार, ऋतु-परिवर्तन, श्रम और उत्सव—को अभिव्यक्त करते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

इन्हें "लोक" और "गीत" के सम्मिलन से उत्पन्न एक ऐसे सांस्कृतिक रूप में भी परिभाषित किया जाता है जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र की सामूहिक अनुभूति को संगीत, ध्वनि, लय और शब्दों के माध्यम से जीवंत करता है। इनके कई प्रकार—विवाह गीत, कृषि गीत, पर्व-त्योहार गीत, श्रम गीत, वीर-गाथा गीत, लोरी आदि—लोकजीवन की विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं। इस प्रकार, लोकगीतों की अवधारणा न केवल संगीत या मनोरंजन तक सीमित है, बल्कि यह समाज की स्मृतियों, मूल्यों और परंपराओं की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करती है।

हिंदी लोकगीतों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिंदी लोकगीतों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं से निर्मित हुई है, जहाँ लोकगीतों की उत्पत्ति का संबंध मानव सभ्यता के प्रारंभिक चरणों से जोड़ा जाता है। आरंभिक काल में जब लिखित भाषा का व्यापक विकास नहीं हुआ था, तब लोकगीत ही सामाजिक अनुभवों, जीवन-मूल्यों, धार्मिक मान्यताओं और सामुदायिक भावनाओं को संरक्षित करने और संप्रेषित करने का प्रमुख माध्यम थे। वैदिक काल में सामूहिक मंत्रोच्चार, ऋतुओं और कृषि चक्र से संबंधित गीत, श्रम-प्रधान जीवन से जुड़े सामूहिक गायन लोकगीत परंपरा के प्रारंभिक स्वरूप माने जाते हैं। समय के साथ जनजातीय समुदायों, ग्रामीण समाज और विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों ने अपने-अपने अनुभवों, बोली-बानी और सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार इन गीतों को समृद्ध किया। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन का प्रभाव लोकगीतों की संरचना और विषय-वस्तु पर स्पष्ट दिखाई देता है, जहाँ लोकभाषाओं में रचे गए भक्ति-गीत, आल्हा, कजरी, चैती, बिरहा, बारहमासा आदि ने न केवल धार्मिक भावना को अभिव्यक्त किया बल्कि सामाजिक एकता और सामुदायिक सहयोग की भावना को भी मजबूत किया। इस काल में लोकगीतों का प्रसार जन-जन तक हुआ और वे साहित्यिक काव्य परंपरा के समानांतर एक जीवंत

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सांस्कृतिक विधा के रूप में विकसित हुए। आधुनिक काल में सामाजिक सुधार आंदोलनों, औद्योगिकीकरण, परिवहन और संचार के विस्तार ने लोकगीतों के स्वरूप में परिवर्तन लाए, जिससे इनके विषयों में सामाजिक चेतना, व्यथा, संघर्ष और आधुनिक जीवन के अनुभव भी शामिल होने लगे। औपनिवेशिक काल में लोकगीतों ने जनजागरण और प्रतिरोध का स्वर भी ग्रहण किया, जबकि स्वतंत्रता के बाद लोककलाओं को प्रोत्साहित करने हेतु संस्थागत प्रयासों ने इनके दस्तावेजीकरण और मंचन में वृद्धि की। वर्तमान समय में, यद्यपि लोकगीतों की परंपरा शहरीकरण, वैश्वीकरण और डिजिटल मनोरंजन के कारण चुनौतियों का सामना कर रही है, फिर भी इनके ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक मूल्य को पुनर्जीवित करने के प्रयास जारी हैं। इस दीर्घ इतिहास में लोकगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज की स्मृतियों, भावनाओं तथा सांस्कृतिक निरंतरता का एक सशक्त माध्यम रहे हैं, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय समाज में लोकगीतों की सांस्कृतिक भूमिका

भारतीय समाज में लोकगीतों की सांस्कृतिक भूमिका अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, क्योंकि ये गीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सामाजिक संरचना, भावनात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और सामुदायिक एकता के मजबूत स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। लोकगीत भारतीय ग्रामीण जीवन में गहराई से रचे-बसे हैं और परिवार, समुदाय तथा परंपराओं के बीच एक मजबूत सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करते हैं। जन्म, विवाह, त्योहार, कृषि, ऋतु-परिवर्तन, पूजा-अर्चना तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीत लोगों के सामूहिक जीवन के अनुभवों, भावनाओं और विश्वासों को अभिव्यक्त करते हैं। इनके माध्यम से सांस्कृतिक मूल्य—जैसे सामूहिकता, सहयोग, प्रकृति-सम्बद्धता, सामाजिक न्याय, धार्मिक आस्था, प्रेम, करुणा और जीवन-दर्शन—

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होते हैं। लोकगीतों में निहित प्रतीक और रूपक भारतीय समाज की सोच और जीवन-दृष्टि को दर्शाते हैं, जो सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में सहायक होते हैं। इनमें क्षेत्रीय विविधता और लोक-भाषाओं की समृद्धता भी झलकती है, जिससे विभिन्न समुदाय अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता को संरक्षित रखते हुए सामाजिक एकता बनाए रखते हैं। लोकगीतों का उपयोग सामुदायिक अनुष्ठानों और पर्व-त्योहारों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ सामूहिक गायन सामाजिक समरसता और भावनात्मक एकता को बढ़ाता है। ग्रामीण समाज में लोकगीत महिलाओं की अभिव्यक्ति का भी एक सशक्त माध्यम रहे हैं, जिनमें वे अपने अनुभवों, संघर्षों, आशाओं और आकांक्षाओं को सहज रूप में प्रकट करती हैं। लोकगीत भारतीय समाज में शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के साधन के रूप में भी कार्य करते हैं, क्योंकि उनके माध्यम से नैतिक मूल्यों, सामाजिक संदेशों और सांस्कृतिक ज्ञान का प्रसार सरलता से होता है। आधुनिक समय में भले ही लोकगीतों की परंपरा डिजिटल और व्यावसायिक संगीत संस्कृति के प्रभाव में परिवर्तित हो रही हो, परंतु उनकी सांस्कृतिक भूमिका आज भी अप्रतिम है। वे भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा के जीवंत वाहक हैं, जो न केवल अतीत की स्मृतियों को संरक्षित करते हैं बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए सांस्कृतिक आधार प्रदान करते हैं।

लोकगीतों में क्षेत्रीय विविधताएँ

भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक, भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के कारण हिंदी लोकगीतों में क्षेत्रीय विविधताएँ अत्यंत समृद्ध और व्यापक रूप से परिलक्षित होती हैं। प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं, जीवन-शैली, लोकमान्यताओं, बोली-बानी और सामाजिक परिवेश के आधार पर लोकगीतों को अलग-अलग रूपों में विकसित करता है, जिससे हिंदी लोकसंगीत एक बहुरंगी सांस्कृतिक धरोहर का स्वरूप ग्रहण करता है। उत्तर प्रदेश में कजरी, बिरहा, आल्हा, होरी और कुमाउँनी-गढ़वाली लोकगीतों में प्रकृति,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रेम, वीरता और सामाजिक अनुभवों का सुंदर मिश्रण मिलता है। बिहार के लोकगीतों—जैसे सोहर, समा-चकेवा, झिझिया, विदायगी और जातीय आधार पर संरचित गीत—में मातृत्व, ऋतुचक्र, कृषि और नारी-जीवन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। राजस्थान के मांड, पधारो म्हारे देस, तीजन, घूमर और पनिहारी गीत रेगिस्तानी जीवन की कठोरता, वीरता, लोकआस्था और राजस्थानी शौर्य संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं। मध्य प्रदेश में निमाड़ी, बुंदेलखंडी और मालवी लोकगीतों की परंपरा ग्रामीण जीवन, श्रम-संस्कृति, देव-पूजन और सामाजिक संबंधों से गहराई से जुड़ी हुई है। हरियाणा के रागिनी, सांग और खेतिहर जीवन से जुड़े गीत सामुदायिक जुड़ाव, लोक-न्याय और ग्रामीण संरचना की झलक प्रस्तुत करते हैं। पूर्वांचल और पर्वतीय क्षेत्रों में लोकगीतों की थीम अधिकतर प्रकृति, अध्यात्म, लोकनृत्य, ऋतु-परिवर्तन और जीवन-संघर्ष के इर्द-गिर्द घूमती है। इन विविधताओं का मुख्य आधार क्षेत्रों की जलवायु, कृषि पद्धति, धार्मिक परंपराएँ, सामाजिक मूल्य और भाषाई स्वरूप हैं, जो इन गीतों को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। इस प्रकार, हिंदी लोकगीतों की क्षेत्रीय विविधताएँ न केवल सांस्कृतिक विविधता की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि भारतीय लोकजीवन की आत्मा को समझने का एक सशक्त माध्यम भी हैं, जो यह स्थापित करती हैं कि लोकगीत किसी एकरूप परंपरा का नहीं, बल्कि अनेक संस्कृतियों, अनुभवों और भावनाओं का सुंदर संयोजन हैं।

लोकगीतों की वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

- **शहरीकरण और आधुनिक मीडिया का प्रभाव**

वर्तमान समय में शहरीकरण और आधुनिक मीडिया का व्यापक विस्तार लोकगीतों की परंपरा पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। तेजी से बदलती जीवनशैली, व्यस्त दिनचर्या और लोकप्रिय डिजिटल मनोरंजन माध्यमों—जैसे फिल्मों, वेब सीरीज़, रियलिटी शो और स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म—ने लोकगीतों की सामूहिक प्रस्तुति, पारंपरिक गायन और सामाजिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

अनुष्ठानों में उनकी भूमिका को काफी हद तक सीमित कर दिया है। लोक-संस्कृति का स्थान तेज़, आधुनिक और व्यावसायिक संगीत ने ले लिया है, जिसके कारण लोकगीतों का सामाजिक उपयोग घट रहा है।

- **नई पीढ़ी में लोकगीतों की घटती सहभागिता**

नई पीढ़ी बढ़ती तकनीकी निर्भरता, वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों और शहरी आकर्षण के कारण लोकगीतों से भावनात्मक रूप से दूर हो रही है। औपचारिक शिक्षा में लोककला पर पर्याप्त ध्यान न दिए जाने, पारिवारिक वातावरण में लोकपरंपराओं के क्षीण होते जाने और मनोरंजन के आधुनिक साधनों के वर्चस्व के कारण युवा वर्ग लोकगीतों को पुरातन या अप्रासंगिक समझने लगा है।

- **व्यावसायीकरण और संगीत उद्योग की भूमिका**

वर्तमान संगीत उद्योग में व्यावसायिक लाभ सर्वोपरि होने के कारण लोकगीतों की मूल संरचना और भावनात्मक गहराई को अक्सर बदल दिया जाता है। लोकधुनों को आधुनिक बीट्स, रीमिक्स और ग्लैमराइज्ड प्रस्तुतियों में ढालने से उनकी प्रामाणिकता कमजोर होती जा रही है। इस व्यावसायीकरण ने पारंपरिक लोककलाकारों की भूमिका को भी सीमित कर दिया है, जिससे वास्तविक लोकगायन के संरक्षक हाशिये पर चले गए हैं।

- **भाषा और बोली-भेद की चुनौतियाँ**

हिंदी लोकगीत विविध बोलियों—जैसे अवधी, भोजपुरी, ब्रज, बुंदेलखंडी, मैथिली, हरियाणवी आदि—में रचे गए हैं। भाषाई विविधता जहाँ सांस्कृतिक संपदा है, वहीं आधुनिक समाज में यह चुनौती भी बनती जा रही है, क्योंकि नई पीढ़ी इन बोलियों से धीरे-धीरे कटती जा रही है। शहरों में एकरूप हिंदी के बढ़ते प्रयोग से लोकगीतों के मूल भाव, लय और बोलियों की विशिष्टता को बनाए रखना कठिन हो रहा है।

- **दस्तावेजीकरण की कमी**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

लोकगीतों का सही रूप में दस्तावेजीकरण अभी भी सीमित है। अधिकांश पारंपरिक गीत मौखिक परंपरा पर निर्भर हैं, जिससे कई गीत समय के साथ खो रहे हैं। शोध संस्थानों, सांस्कृतिक अकादमियों और संग्रहालयों द्वारा किए गए प्रयास महत्वपूर्ण हैं, परंतु वे पर्याप्त नहीं हैं। तकनीकी साधनों के बढ़ते उपयोग के बावजूद व्यवस्थित डिजिटल आर्काइविंग, ध्वनि-संरक्षण और वीडियो दस्तावेजीकरण की कमी आज भी एक बड़ी चुनौती है।

एकीकृत रूप से देखा जाए तो लोकगीतों की वर्तमान स्थिति सांस्कृतिक परिवर्तन, तकनीकी विकास और सामाजिक व्यवहार में आए बदलावों से प्रभावित है, जिसके कारण इनके संरक्षण हेतु समन्वित, नवाचारपूर्ण और सामुदायिक प्रयासों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

संरक्षण हेतु मौजूदा उपाय (Existing Preservation Measures)

- **सरकारी प्रयास**

हिंदी लोकगीतों के संरक्षण में सरकारी संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, संगीत नाटक अकादमी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) तथा राज्य स्तरीय कला-संस्कृति विभाग विभिन्न लोककलाओं के प्रलेखन, शोध, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन हेतु योजनाएँ संचालित करते हैं। लोकसंगीत महोत्सव, कलाकारों को आर्थिक सहायता, लोककला फैलोशिप और संग्रहालयों में लोकगीत संकलन जैसे प्रयास संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय हैं।

- **गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका**

कई गैर-सरकारी संगठन (NGOs) ग्रामीण कलाकारों की पहचान, प्रशिक्षण और मंच उपलब्ध कराने में सक्रिय हैं। ये संगठन लोकगीतों के दस्तावेजीकरण, ग्रामीण वंचित कलाकारों के सशक्तिकरण और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने के लिए कार्य करते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

हैं। सामुदायिक केंद्रों और स्वयंसेवी समूहों द्वारा संचालित लोक-संगीत शिविरों और कार्यशालाओं से लोकगीतों का संरक्षण और प्रसार संभव हो रहा है।

- **सांस्कृतिक संस्थानों और अकादमियों का योगदान**

सांस्कृतिक अकादमियाँ, विश्वविद्यालयों के लोककला विभाग, क्षेत्रीय संस्कृति केंद्र और शोध संस्थान लोकगीतों के व्यवस्थित अध्ययन, दस्तावेज़-संग्रह, ध्वनि-संग्रहालय और शैक्षणिक शोध को प्रोत्साहित करते हैं। संगीत नाटक अकादमी, लोक-संग्रहालयों और सांस्कृतिक शोध केंद्रों द्वारा प्रकाशित ग्रंथ, ऑडियो-रिकॉर्डिंग और प्रलेखन परियोजनाएँ लोकगीतों को शैक्षणिक पहचान प्रदान करती हैं और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करती हैं।

- **शिक्षा प्रणाली में लोकगीत संरक्षण**

नई शिक्षा नीति और संस्कृति-आधारित पाठ्यक्रमों में लोककलाओं को सम्मिलित किए जाने के प्रयास से लोकगीत संरक्षण को नई दिशा मिली है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोकगीत प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीत-वर्गों में लोकधुनों का समावेश और प्रायोगिक अध्ययन छात्रों को लोक-संस्कृति से जोड़ते हैं। इससे नई पीढ़ी में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ती है और लोकगीतों में रुचि पुनर्जीवित होती है।

- **मीडिया व डिजिटल माध्यमों के प्रयास**

टेलीविजन, रेडियो, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों ने लोकगीतों के संरक्षण और प्रसार को नई गति दी है। ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन द्वारा लोकसंगीत आधारित कार्यक्रम आज भी बड़ी संख्या में दर्शकों को जोड़ते हैं। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम और पॉडकास्ट प्लेटफ़ॉर्म पर लोकगीतों के लाइव प्रदर्शन, डॉक्यूमेंट्री और आर्काइव उपलब्ध हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर इनकी पहुँच बढ़ी है। डिजिटल रिकॉर्डिंग, ऑनलाइन म्यूज़ियम और ई-आर्काइविंग ने लोकगीतों के संरक्षण को तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया है। सरकारी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

योजनाओं, गैर-सरकारी संस्थाओं, सांस्कृतिक विभागों, शिक्षा प्रणाली और डिजिटल माध्यमों द्वारा किए जा रहे ये मौजूदा प्रयास हिंदी लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, हालांकि इनके व्यापक और समन्वित क्रियान्वयन की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. (2010). नॉर्थ इंडिया की लोक परंपराएं। नई दिल्ली: आर्यन बुक्स।
2. बोस, एन. के. (2008). इंडिया में कल्चर और सोसाइटी। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।
3. देवी, जी. एन. (2011). ओरल कल्चर और देसी ज्ञान। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
4. धर, एस. (2015). लोक संगीत का बचाव: चुनौतियां और स्ट्रेटेजी। जर्नल ऑफ इंडियन फोकलोर स्टडीज, 22(2), 45–58।
5. दूबे, एस. (2003). इंडियन सोसाइटी एंड कल्चर: कंटिन्यूटी एंड चेंज। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
6. गोखले, एस. (2017). इंडियन लोक परंपराओं को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका। कल्चरल स्टडीज रिव्यू, 14(1), 60–72।
7. झा, एस. के. (2012). बिहार के लोक गीत: एक सोशियोकल्चरल स्टडी। इंडियन फोकलोर रिसर्च जर्नल, 18(3), 112–128.
8. कश्यप, ए. (2018). भारत में लोक कलाओं की डिजिटल आर्काइविंग: संभावनाएं और चुनौतियां. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कल्चरल हेरिटेज, 10(4), 88–99.
9. पांडेय, आर. (2005). लोकगीत एवं लोकसंस्कृति. इलाहाबाद: हिंदी साहित्य संस्थान.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

10. सक्सेना, आर. (2014). उत्तर भारत में मौखिक परंपराएं और क्षेत्रीय पहचान. जर्नल ऑफ़ साउथ एशियन कल्चरल स्टडीज़, 5(2), 75–91.
11. शर्मा, वी. (2019). सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से भारतीय लोक कलाओं को पुनर्जीवित करना. हेरिटेज एंड सोसाइटी, 12(3), 155–170.
12. सिंह, के. (2001). भारतीय लोकगीत: परंपरा, इतिहास और संस्कृति. नई दिल्ली: मनोहर पब्लिकेशन्स.
13. त्रिपाठी, एम. (2016). हिंदी बेल्ट का लोक संगीत: एक तुलनात्मक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ म्यूज़िकोलॉजी, 9(1), 33–48.
14. वर्मा, एन. (2009). महिलाएं और लोक गीत: एक सांस्कृतिक नज़रिया। जर्नल ऑफ़ जेंडर एंड कल्चर स्टडीज़, 7(4), 102–118.
15. यादव, पी. (2020). लोक विरासत को बचाने में टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन। एशियन जर्नल ऑफ़ कल्चरल प्रिजर्वेशन, 6(2), 50–63.